

पद्मावत : लोक-जीवन और संस्कृति का समन्वयवादी काव्य

डॉ. सुषमा सहरावत,

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
कमला नेहरू कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय

शोध सारांश

‘पद्मावत’ एक ऐसा प्रेमाख्यानक काव्य है जो न केवल साहित्यिक अपितु सांस्कृतिक दृष्टि से भी विशेष महत्त्व रखता है। लोक-जीवन से सम्बंधित विविध प्रकार की सांस्कृतिक झांकियां यहाँ देखी जा सकती हैं। मध्ययुगीन लोक-व्यवहार, लोकोत्सव, आचार-विचार, तीर्थ, व्रत, मन्त्र-तंत्र, जादू-टोना, उत्सव, विवाह, रहन-सहन इत्यादि सब कुछ यहाँ उजागर हुआ है। सांस्कृतिक समन्वय और लोक-चेतना के कवि जायसी ने मध्ययुगीन भारतीय जन-जीवन को व्यक्त करने के लिए भले ही आध्यात्मिक-रहस्यवादी संकेतों और सूफी दर्शन के सिद्धांतों का सहारा लिया हो किन्तु हिन्दू प्रेम कहानियों को लोक-जीवन के स्तर पर सहज मानवीय भूमि पर उतार कर चित्रित करने में पूर्ण सफल रहे हैं क्योंकि उनका दृष्टिकोण व्यापक और समन्वयवादी था।

प्रेम जीवन का एक शाश्वत भाव है और इसीलिये अनादिकाल से ही काव्य का भी एक व्यापक तत्व रहा है। प्रेमाख्यान काव्य की एक सुदीर्घ परम्परा भारतीय साहित्य में लक्षित होती है। मध्ययुग से पूर्व जहाँ उसका लक्ष्य श्रृंगार भावना का पल्लवन था वहीं मध्ययुग में सूफी कवियों के आगमन से इसके स्वरूप में परिवर्तन हुआ। प्रेम के माध्यम से इश्वाराधना का मार्ग प्रशस्त करने का उद्देश्य लेकर चलने वाले इन सूफी कवियों ने हिन्दू-मुस्लिम दोनों धर्मों के विशेष पुरुषों, अवतारों आदि की चर्चा अवश्य की किन्तु उसमें कहीं भी साम्प्रदायिकता या इस्लाम प्रचार की भावना का पुट नहीं है क्योंकि उनका दृष्टिकोण व्यापक और समन्वयवादी था। जन-जीवन में प्रचलित हिन्दू कहानियों को माध्यम बनाकर अपनी मान्यताओं और सूफी मत के प्रसार के क्रम में इन्होंने तत्कालीन लोक-जीवन और संस्कृति की विविध झांकियां प्रस्तुत की हैं। यही कारण है कि मध्ययुगीन भारतीय समाज को यदि उसकी सम्पूर्णता में जानना है तो इन प्रेमाख्यानक काव्यों

को दरकिनार नहीं किया जा सकता। भारतीय लोक-जीवन के विविध पक्षों का सुंदर निरूपण यहाँ मिलता है। ध्यातव्य है कि इन सूफी कवियों ने तदयुगीन समाज में व्याप्त लोक-व्यवहारादि पर अपनी कोई टीका-टिपणी न करके इनका यथावत वर्णन किया है क्योंकि इनका लक्ष्य संतों की भांति खंडन-मंडन न होकर प्रेमतत्त्व की प्रधानता स्थापित करना था। प्रेम के लोक-सम्बद्ध तथा सांस्कृतिक रूप को प्रदर्शित कर समाज में समन्वयवादी दृष्टि की स्थापना का प्रयास इन सूफी कवियों की महत्त उपलब्धि है। यही देखकर आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने ‘हिंदी साहित्य का इतिहास’ में लिखा है कि ‘‘प्रेम-स्वरूप ईश्वर को सामने लाकर सूफी कवियों ने हिन्दू और मुसलमान दोनों को मनुष्य के सामान्य रूप में दिखाया और भेद-भाव के दृश्यों को हटाकर पीछे कर दिया।’’ तथा ‘‘कुतुबन, जायसी आदि इन प्रेम-कहानी के कवियों ने प्रेम का शुद्ध मार्ग दिखाते हुए उन सामान्य जीवन-दशाओं को सामने रखा, जिनका मनुष्यमात्र के हृदय पर

एक-सा प्रभाव दिखाई पड़ता है। हिन्दू और मुसलमान-हृदय को आमने-सामने करके अजनबीपन मिटाने वालों में इन्हीं का नाम लेना पड़ेगा।² मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा कल्पना और इतिहास का सुंदर संयोग कर लिखा गया 'पद्मावत' एक ऐसा प्रेमाख्यानक काव्य है जो न केवल साहित्यिक अपितु सांस्कृतिक दृष्टि से भी विशेष महत्त्व रखता है। इस ग्रन्थ में चित्तौड़ के राजा रत्नसेन और सिंहल द्वीप की राजकुमारी पद्मावती की लौकिक प्रेम कहानी, उनके प्रेम-विवाह और विवाहेतर जीवन के विस्तृत चित्रण के माध्यम से सूफी सिद्धांतों के अनुसार अलौकिक प्रेम की अभिव्यक्ति की है। सोलहवीं शताब्दी की रचना होने के कारण पद्मावत में तद् युगीन भारतीय जन-जीवन और संस्कृति की सहज अभिव्यक्ति हुई है। लोक-जीवन से सम्बंधित विविध प्रकार की सांस्कृतिक झांकियां यहाँ देखी जा सकती हैं। मध्ययुगीन लोक-व्यवहार, लोकोत्सव, आचार-विचार, तीर्थ, व्रत, मन्त्र-तंत्र, जादू-टोना, उत्सव, विवाह, रहन-सहन इत्यादि सब कुछ यहाँ उजागर हुआ है। जायसी की दृष्टि लोक-जीवन में व्याप्त विषमताओं से अनभिज्ञ नहीं थी। धनी और निर्धन के बीच की खाई, भूख और गरीबी की पीड़ा को भी उन्होंने समझा है, निम्न पंक्तियाँ देखिये-

“कीन्हेसी कोई भिखारि कहि धनी। कीन्हेसी
सम्पति बिपति पुनी धनी।³

काहू भोग भुगुति सुख सारा। काहू बहुत भूख
दुख मारा।⁴

इसी तरह, समाज में व्याप्त असमानता पर कवि
की दृष्टि गई है-

“कीन्हेसि सुख औ कोऊ अनंदू, कीन्हेसि दुख
चिंता औ दंदू।

कीन्हेसि कोइ भिखारि कोइ धनी, कीन्हेसि संपति
विपति पुनि घनी।⁵

असल में, “मध्यकाल मुसलमानों के भारत पर आक्रमण, संक्रमण तथा समन्वय का काल है। ये दोनों संस्कृतियाँ प्रायः एक दूसरे को समझने और एक-दूसरे से कुछ न कुछ सीखने का प्रयत्न कर रही थीं।⁶ तद् युगीन साहित्य भी इससे अछूता नहीं रहा। फलस्वरूप कवियों ने मध्यकालीन भारतीय हिन्दू तथा मुस्लिम जीवन के विभिन्न पक्षों को अपनी कृतियों में सहजता से प्रस्तुत किया है।

अवध प्रांत के ठेठ कवि होने के कारण मध्यकालीन लोक जीवन अपने समस्त आचार-विचार, रहन-सहन, मान्यताओं, रीति-रिवाजों के साथ जायसी के काव्य में सहजता से वर्णित हुआ है। जायसी ने तत्कालीन समाज की व्यवस्था को गहराई से देखा और समझा है। पद्मावत के प्रारम्भिक खंड 'स्तुति खंड' में ही शेरशाह सूरी की शासन व्यवस्था की समस्त रीति-नीतियों से अवगत कराते हुए जायसी ने अपनी विशाल सामाजिक चेतना का परिचय देते हुए तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था का यथार्थ चित्र हमारे समक्ष खींचा है। मध्यकालीन भारतीय समाज अनेक रुढ़ियों और अंधविश्वासों में जकड़ा हुआ था। जायसी की लोक चेतना इससे अनभिज्ञ नहीं थी। पद्मावत में अनेक स्थलों पर इसके उदाहरण मिल जाते हैं। वस्तुतः “पद्मावत में नगर वर्णन, षडत्रय वर्णन, बारह मासा, नख-शिख वर्णन केवल रुढ़िपालन के रूप में नहीं मिलता है। उसमें कवि की कल्पना सहृदयता के सहारे मार्मिक एवं करुण दृश्य-विधान खड़ा करती है।⁷ जोगी खंड के प्रारम्भ में ही ज्योतिषी राजा रत्नसेन को टोकते हैं - “गनक कहहिं करु गवन न आजू। दिन लै चलहिं फरै सिधि काजू।⁸ इससे पता चलता है कि उस युग में ज्योतिषियों का कितना वर्चस्व था किन्तु अगली ही पंक्ति में जायसी रत्नसेन के मुँह से यह कहलाते हैं कि “प्रेम पंथ दिन घरी न देखा। तब देखै जब होइ सरेखा।... पंडित भुलान न जानै चालू। जोऊ लेत दिन पूछ न कालू।⁹ यहाँ

उनकी लोक-चेतना का जागृत स्वरूप देखने को मिलता है जो रूढ़ियों-अन्धविश्वासों से परे सोचती है। इसी तरह चित्तौड़ के वैभवशाली हाट बाज़ार का उल्लेख करते समय बनिजारा खंड के प्रथम पद में ही जब जायसी लिखते हैं कि – “देखि हाट किछु सूझ न ओरा। सबै बहुत किछु दीख न थोरा। पै सुटि ऊँच बनिज तह केरा। धनी पाऊ निधनी मुख हेरा।”¹⁰ तो यहाँ जायसी की लोक-चेतना का सामाजिक पक्ष उभरकर सामने आता है। रत्नसेन सूली खंड भी इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। सिंहलपुरी की प्रजा जब रत्नसेन से उनकी जाति-कुल के बारे में पूछती है तो रत्नसेन कहते हैं-“का पूछहु अब जाति हमारी। हम जोगी ओ तपा भिखारी। जोगिहि कौन जाति, हो राजा”¹¹ अर्थात् अप्रत्यक्ष रूप से जायसी कहना चाहते हैं कि जोगी-तपस्वी होने के लिए किसी जाति विशेष से सम्बद्ध होना जरूरी नहीं होता, अपने तप व लगन के बूते कोई भी व्यक्ति तपस्वी बन सकता है, जोगी-तपस्वी की कोई जाति नहीं होती। वैसे ऐसे स्थल यदा-कदा ही दिखलाई पड़ते हैं क्योंकि अपनी सामाजिक चेतना को अभिव्यक्त करते-करते ये सूफी कवि थम-से जाते हैं और भारतीय मान्यताओं एवं रीति-रिवाजों को बिना अपनी किसी टिका-टिप्पणी के जस का तस बयां करते चलते हैं। इसका एक प्रमुख कारण हिन्दुओं के मन में सूफी मत के प्रति सद्भावना स्थापित करना भी रहा होगा।

भारतीय लोक-संस्कृति का आधार समाज में व्याप्त विविध प्रकार की पौराणिक तथा लोक-प्रचलित धारणाएं, विश्वास और मान्यताएं भी रही हैं। लोक-जीवन के विविध पक्षों के साथ ये गहरे जुड़ी होती हैं और इसीलिए इन्हें अलग करके नहीं देखा जा सकता। पद्मावत में इस तरह की मान्यताएं और विश्वास प्रचुरता से वर्णित हुए हैं। इन्द्रलोक और उनकी अप्सराओं का वर्णन, महादेव दृपार्वती द्वारा भांट-भांतिनी रूप धारण, हनुमान द्वारा सहायता करने का वर्णन,

समुद्र का ब्राह्मण रूप धरना, विष्णु के शंख और महादेव के घंटे का महत्त्व आदि लोक-जीवन में प्रचलित पौराणिक मान्यताएं हैं जिनका उल्लेख जायसी ने पद्मावत में किया है। लोक-प्रचलित मान्यताओं के अंतर्गत ज्योतिष, भाग्य, पुनर्जन्म, कर्मफल जैसे पक्ष आते हैं। पद्मावत इन सभी पक्षों को देखा जा सकता है। वस्तुतः “तद्युगीन ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य के साथ-साथ इस रचना के सांस्कृतिक महत्त्व को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता है। पद्मावत में हिन्दू और मुस्लिम संस्कृति का समन्वयात्मक दृष्टिकोण से प्रस्तुतिकरण किया गया है। हिन्दू घराने की कथा के द्वारा उदार और सहृदय कवि ने पावन-प्रेम का सुन्दर सन्देश सरस और मनोरम ढंग से सरल, सहज और प्रभविष्णु भाषा में उपस्थित किया है, जिसके कारण पद्मावत परम-प्रेम का एक अन्यतम और ग्रन्थ-रत्न बन गया है।”¹² पद्मावत के प्रारम्भ में स्तुति खंड में ही इस समन्वयात्मक दृष्टि के दर्शन किये जा सकते हैं। कवि यदि इस्लाम धर्म के अनुसार पैगम्बर मुहम्मद तथा अठारह हजार जीवों आदि की गणना भी करता है तो हिन्दू धर्म के विविध वस्तु-व्यापारों का भी अपने ग्रन्थ में उल्लेख करता है। इसी प्रकार इस्लाम धर्म की मान्यतानुसार ईस्लाम की ही भाँति ईश्वर अवतार नहीं ले सकते किन्तु हिन्दू धर्म के अनुसार शिव, पार्वती, हनुमान आदि ईश्वरीय शक्तियां अवतार भी लेती हैं और रूप-परिवर्तित कर अपने भक्तों की रक्षा भी करती हैं और कभी-कभी उनकी परीक्षा भी लेती हैं। पद्मावत में भी कवि ने शिव, पार्वती एवं हनुमान का वर्णन इसी संदर्भानुसार कर भारतीय और मुस्लिम संस्कृतियों, मान्यताओं और आदर्शों का सम्मिलित रूप प्रस्तुत किया है। राजा-गढ़-छेंका खंड में रत्नसेन की परीक्षा लेने पर शिव एक सिद्ध गुटिका वरदान स्वरूप प्रदान करते हैं-“सिद्ध गुटिका राजै जब पावा। पुनि भइ सिद्धि गनेस मनावा।”¹³ इसी तरह लक्ष्मी भी रत्नसेन की परीक्षा लेती हैं तथा समुद्र में बहती हुई पद्मावती की रक्षा भी करती हैं-“लाखिमनी

लखन बतीसी लखी। कहेरिव न मरै संभारहु सखी।”¹⁴

खानपान भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। वैसे भी खानपान की विविध पद्धतियों, शैलियों एवं विधियों द्वारा किसी स्थान, समाज व युग विशेष की परम्पराओं, सभ्यता व संस्कृति को समझा जा सकता है। पद्मावत में भी मध्ययुगीन भारतीय समाज में प्रचलित विविध प्रकार के व्यंजनों का उल्लेख मिलता है। रत्नसेन-पद्मावती विवाह खंड में भोजन के छप्पन प्रकारों का निर्देश करते हुए जायसी कहते हैं – “औ छप्पन परकार जो आए, नहिं अस देख न कबहुँ खाए।”¹⁵ इसी तरह दही से बनने वाले व्यंजन मोरंड आदि का वर्णन भी यहाँ मिलता है तो लौकी, टिंडा सेम आदि विभिन्न प्रकार की सब्जियों का उल्लेख भी। ज्यौनार में पकाने वाले चावलों के सत्ताईस प्रकारों का उल्लेख भी जायसी ने किया है। बादशाह-भोज खंड इस तरह के वर्णनों से भरा पड़ा है। इसी खंड में वे कहते हैं कि एक-एक काठ की हांडी का सामान चखने से सत्तर सहस्र स्वाद मिलते थे – “एक कठहंडी जेवत सत्तरि सहस सवाद।” तथा “एक खंड जौ खाइ तौ, पावै सहस सवाद”¹⁶ आचार्य रामचंद्र शुक्ल ऐसे वर्णनों को ‘भद्दी परंपरा’ कहते हुए कहते हैं कि “इसमें अनेक युक्तियों से बनाए हुए व्यंजनों, पकवानों, तरकारियों और मिठाइयों इत्यादि की बड़ी लंबी सूची है-इतनी लंबी कि पढ़नेवाले का जी ऊब जाता है। यह भद्दी परंपरा जायसी के पहले से चली आ रही थी।”¹⁷ आचार्य शुक्ल भले ही इसे ‘भद्दी परंपरा’ नाम दें किन्तु जो व्यक्ति पाक कला में रुचि रखते हैं उनके लिए ऐसे वर्णन ऊबाऊ न होकर अत्यंत रोचक रहते हैं तथा मध्यकालीन खानपान व पाककला को समझने में सहायक सिद्ध होते हैं। वर्तमान में एपिक चैनल पर चलाया जाने वाला सफल कार्यक्रम ‘राजा रसोई’ तो ऐसे लुप्तप्रायः व्यंजनों और उन्हें बनाने की विधि की ही पड़ताल करता है जो कभी भारतीय खानपान एवं संस्कृति का

अभिन्न हिस्सा रहे थे। ऐसे में पद्मावत में वर्णित व्यंजनों एवं उनके विधि वर्णन को निरर्थक या भद्दी परंपरा तो कतई नहीं ही कहा जा सकता।

भारतीय जन-जीवन में विविध संस्कार महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। हिन्दू संस्कृति में मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त गर्भाधान, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, वेदारम्भ, विवाह, वानप्रस्थ, संन्यास, अंत्येष्टि आदि सोलह संस्कारों को आवश्यक माना गया है। पद्मावत में जायसी ने जन्म और विवाह के अवसर पर अपनाये जाने वाले विविध संस्कारों और रीति-रिवाजों का बखूबी चित्रण किया है। पद्मावती के जन्म के उपलक्ष्य में छठी का उत्सव तथा नामकरण की रस्मों का जन्म-लग्न और जन्म-नक्षत्र के अनुसार विधिवत आयोजन किये जाने का चित्रण करते हुए जन्म खंड में कवि लिखते हैं – “भै छठि राति छठीं सुख मानी। रहस कूद सौं रैनि बिहानी। भा बिहान पंडित सब आए। काढि पुरान जनम अरथाए। उत्तिम घरी जनम भा तासू। चाँद उआ भुइ दिपा अकासू। कन्यारासि उदय जग कीया। पद्मावती नाम अस दीया”¹⁸ इसी प्रकार कवि ने विवाह के अवसर पर कन्या के लिए सुयोग्य वर ढूँढने से लेकर विवाह तक अपनाए जाने वाले समस्त संस्कारों का विस्तृत और सजीव चित्रण किया है। रत्नसेन-पद्मावती-विवाह खंड में विवाह उत्सव मानों साकार हो उठा है। विवाह मंडप का यह दृश्य देखिये जिसमें वर-वधू के मंगलाचार गाया जाता है, फिर जयमाला होती है, गठबंधन के पश्चात अग्नि को साक्षी मान फेरे लिये जाते हैं, अंजुलि में जल भरकर पिता द्वारा कन्यादान किया जाता है-“दुऔ नांव लै गांवहीं बारा। करहिं सो पदिमनि मंगलचारा। चाँद के हाथ दीन्ह जयमाला। चाँद आनि सूरज गिउ घाला। सुरुज लीन्ह चाँद पहिराई। हार नखत तरइन्ह स्यों पाई। पुनि धनि भरि अंजुलि जल लीन्हा। जोबन जनम कंत कह दीन्हा। कंत लीन्ह दीन्हा धनि हाथा। जोरि गाँठ दुऔ एक साथ। चाँद सुरुज सत भांवरि लेहीं। नखत मोति नेवाछावरि

देहीं। फिरहिं दुऔ सत फेर घुटै कै। सातहु फेर गांठि सौ एकै। भइ भाँवरि नेवाछावरि राज चार सब कीन्ह। दायज कहौकहाँ लागि? लिखि न जाइ जत दीन्ह¹⁹ इसमें जायसी ने दायज अर्थात् दहेज का उल्लेख किया है जिससे पता चलता है कि मध्ययुग में दहेज प्रथा विद्यमान थी और वधू पक्ष की ओर से अधिकाधिक दहेज देने का चलन था। जायसी ने तत्कालीन समाज में अपनाये जाने वाले मनोरंजन के विभिन्न साधनों का भी उल्लेख किया है। शतरंज, चौपड़ और चौसर के खेल मध्ययुग में लोकप्रिय थे। पद्मावती और रत्नसेन यदि चौपड़ का खेल खेलते हैं तो दूसरी ओर रत्नसेन और अलाउद्दीन खिलजी शतरंज का खेल खेलते हुए दिखाए गए हैं। इसी तरह संगीत, नृत्य, ढोल और नगाड़ों आदि का वर्णन भी पद्मावत में मिलता है। भारतीय पर्वो-त्योहारों का ज्ञान भी जायसी को बखूबी था। होली, दिवाली तथा वसंत उत्सव का उल्लेख पद्मावत में कवि ने किया है। बसंत खंड नामक बीसवां खंड तो वसंत पंचमी उत्सव को ही समर्पित है। तत्कालीन समाज में व्याप्त विविध प्रकार के रीति-रिवाजों और प्रथाओं पर भी जायसी की दृष्टि गई है। मध्ययुग में अत्यधिक रूप से प्रचलित पर्दा प्रथा हो, सती या जौहर प्रथा हो, पद्मावत में इनका वर्णन हुआ है। भारतीय जन-जीवन और संस्कृति में विभिन्न प्रकार की कलाओं का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। जायसी द्वारा पद्मावत में वास्तुकला, चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत एवं नृत्यादि से सम्बंधित किये गए विस्तृत वर्णनों से पता चलता है कि मध्ययुग में इन सब कलाओं का कितना महत्त्व था। सिंहलद्वीप वर्णन खंड तथा चित्तौड़गढ़ वर्णन खंड इस दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय हैं।

वस्तुतः सांस्कृतिक समन्वय और लोक-चेतना के कवि जायसी ने मध्ययुगीन भारतीय जन-जीवन को व्यक्त करने के लिए भले ही आध्यात्मिक-रहस्यवादी संकेतों और सूफी दर्शन के सिद्धांतों का सहारा लिया हो किन्तु हिन्दू प्रेम कहानियों को लोक-जीवन के स्तर पर

सहज मानवीय भूमि पर उतार कर चित्रित करने में पूर्ण सफल रहे हैं और इस क्रम में उनकी सक्रिय सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना के दर्शन सहज रूप से किये जा सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पृष्ठ 56, नागरी प्रचारिणी सभा, , वाराणसी 34वां संस्करण, संवत् 2056 वि.
2. वही
3. जायसी ग्रंथावली, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पृष्ठ 190, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1970.
4. वही, पृष्ठ 190
5. वही, पृष्ठ 190
6. मध्ययुगीन प्रेमाख्यानक काव्यों का सांस्कृतिक अध्ययन, डॉ. यमुनाप्रसाद रतूड़ी, पृष्ठ 59, अविराम प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2011.
7. हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, विश्वनाथ त्रिपाठी, पृष्ठ 28, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1986.
8. जायसी ग्रंथावली, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पृष्ठ 171
9. वही, पृष्ठ 171
10. वही, पृष्ठ 128
11. वही, पृष्ठ 290
12. मध्ययुगीन प्रेमाख्यानक काव्यों का सांस्कृतिक अध्ययन, डॉ. यमुनाप्रसाद रतूड़ी, पृष्ठ 85

13. जायसी ग्रंथावली, आचार्य रामचंद्र शुक्ल,
पृष्ठ 275

14. वही, पृष्ठ 275

15. वही, पृष्ठ 302

16. वही पृष्ठ 412

17. वही, पृष्ठ 87–88

18. वही पृष्ठ 205

19. वही, पृष्ठ 303